

# अर्पिता सिंह की कला को सम्मान

प्रयाग शुक्ल

**आ**ज अर्पिता सिंह नई दिल्ली में ललित कला अकादेमी की रत्न सदस्यता से सम्मानित हो रही हैं। यह उन सबके लिए हर्ष का विषय है, जिन्होंने पिछले पचास वर्षों में उनकी कला के विभिन्न चरणों में, उनकी आत्मीयता भरी अभिव्यक्ति को, लगातार प्रस्तुतित होते हुए देखा है; और उसकी सुवास का अनुभव किया है। वे उन चित्रकारों में हैं, जिनकी कला में मानव-आकृतियाँ विभिन्न भाव-भंगिमाओं में हमेशा उपस्थित रही हैं- राग-विराग की, सुख-दुख की, हर्ष-शोक की, और जीवन के उल्लास और जिजीविषा की ये छवियाँ मानो हमारे हृदय में सीधे ही उतरती हैं, और हमसे बतियाने लगती हैं।

उनकी कला में रेखाओं की एक अहम भूमिका है, जिसका आस्वाद हम अलग से भी ले सकते हैं- ये कभी धारदार हैं, कभी लता-गुल्मों की टहनियों-डंडियों जैसी, कभी उनमें एक ऐंठन है, कभी वे अलस भाव से पसरती हुई हैं- रेखांकनों और चित्रों दोनों में। उनकी कला में निस्संदेह हमारे समय की भी एक मुखर अभिव्यक्ति है: पिछले दशकों में देश-दुनिया में

बढ़ती हुई हिंसा ने, आतंकवाद ने, असहिष्णुता ने, उन्हें गहरे में विचलित किया है- उनके चित्रों में सैनिकों के मार्च, आतंकियों और शवों के ढेर हैं, सशस्त्रों और निहत्थों के बीच की मुठभेड़ें हैं। और हैं उनके चित्रों में रोजमर्रा के साधारण कामकाज में लगे हुए स्त्री-पुरुष, वार्धक्य से ग्रस्त चेहरे, अलस मुद्राएं, किसी चिंता में, या किसी अन्य भाव स्थिति में कुछ सोचते स्त्री-पुरुष, किताब में डूबी लड़की, पार्क की बेंचें, सड़कें, सड़कों के नक्शे, घर की कुर्सियाँ, परदे, किसी घर के भीतर का सामान्य जीवन, किसी तालाब में नहाते-तैरते स्त्री पुरुष, पक्षी, वायुयान आदि।

किसी उपन्यास या कविता कहानी की तरह भी हम उनके चित्रों को पढ़ सकते हैं। उनके चित्रों की इमेजिन में, दृश्यों में अपनी ओर से कोई 'कथा' पिरो सकते हैं। वे प्रायः उन चित्रों में भी, जिनमें कोई शोकगाथा होती है, कभी हाशिए पर सृष्टि की सुंदर चीजें बनाना नहीं भूलें- चांद-तारे,

वृक्ष-पुष्प, वर्षा बूंदें वहां यह याद दिलाने के लिए जरूर रहे हैं कि जो जीवन हम जीते हैं, किन्हीं सीमाओं में घिरा, उसके बाहर एक अशेष, अनंत जीवन भी है।

उनकी दिलचस्पी पुराण कथाओं, जातक कथाओं आदि में भी बहुत गहरी है। मातृभाषा बांग्ला है (अर्पिता दत्त नाम में 'सिंह' तो सुप्रसिद्ध कलाकार परमजीत सिंह से विवाह के बाद जुड़ा है।) सो, बांग्ला-साहित्य की वे एक अच्छी पाठक हैं। दिल्ली में बड़ी हुई हैं- हिंदी-अंग्रेजी पुस्तकों के माध्यम से भी वे साहित्य, और अन्य अनुशासनों की खोज-खबर लेती रहती हैं। पशु-पक्षियों में, फूलों-फल में उनकी गहरी रुचि है।

अर्पिता सिंह



खान-पान पर, संस्कृतियों पर, वस्त्रों पर- उनकी सिलाई-बुनाई-कढ़ाई पर, हस्तशिल्पों पर चर्चा करने में उन्हें आनंद आता है। विट और स्पूर की कमी नहीं है। किसी तरह के दिखावे पर, उनकी हंसी फूट पड़ती है।

अर्पिता सिंह के पिछले कई वर्षों की कृतियों में संख्याएं भी प्रकट होती रही हैं। संभवतः इस

बात का संकेत करते हुए कि कैलेंडरी तारीखों का भी अपना अर्थ है- उस समय का जिस अवधि में हम जीते हैं। पर प्रकृति की, काल की अवधारणा उनके यहां सीमाबद्ध नहीं है। उनके नीले को, उनके गुलाबी रंगों को, अब हम उनकी कृतियों की एक पहचान के रूप में देखने लगे हैं, जिन्हें वे बेहद कल्पनाशील ढंग से बरतती हैं। उनकी चित्र-भाषा साहसिक है। भूपेन खक्खर और अर्पिता सिंह हमारे समय के दो ऐसे चित्रकार हैं, जिन्होंने जीवन-व्यापी प्रसंगों-घटनाओं को उनके बिल्कुल कच्चे-सोंधे रूपों से उठाकर, अपनी कला की आत्मीय आंच से 'पका' दिया है।

अर्पिता सिंह के इधर के रेखांकनों का यह भी एक विशिष्ट गुण है कि आकृतियों-आकारों की बुनावट-बनावट को वे विशुद्ध रेखाओं से संपन्न करती हैं; उनमें कोई शेडिंग (अन्य रंगतें) नहीं रहती हैं, रंग भी बहुत कम रहते हैं, कागज का सफेद अंतरालों में सफेद की तरह ही दिखाता रहता है, और ये रेखांकन हमें बांधे रखते हैं। उन्होंने अपने हर दौर के काम में, हमें 'देखने' सोचने को कुछ 'नया' दिया है।

उन्हें बधाई! और शुभकामनाएं।